वर्ष-1, अंक-4, सितम्बर-अक्टूबर-नवम्बर, 2013

सदानीरा

विश्व कविता की पत्रिका

सम्पादक

आग्नेय

सदानीरा

विश्व कविता की पत्रिका

सदानीरा का ई-संस्करण **sadaneera.com** पर उपलब्ध

एक वर्ष में चार बार प्रकाशि
यह अंक **: सितम्बर-अक्टूबर-नवम्बर, 2013**
मूल्य - 100 रुपये, वार्षिक 400 रुप
संस्थाओं के लिए वार्षिक 500 रुप
विदेश के लिए एक प्रति 5 डालर, वार्षिक 25 डाल

वार्षिक शुल्क **सदानीरा** के नाम पर
भोपाल में देय चेक या डिमाण्ड ड्राफ्ट य
मनीऑर्डर से भेजें.

अंक रजिस्टर्ड डाक से प्रेषित

सम्पादकीय सम्पर्क

बी-207, चिनार वुडलैण्ड,
कोलार रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.
फ़ोन : 0755-2424126
मो.- 093031-39295, 094244-1013
ई-मेल- agneya@hotmail.com

प्रकाशक

महेन्द्र गगन
25-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.
फ़ोन- 0755-25578
मो.- 094250-1178
ई-मेल- pahlepahal@gmail.com

अनुक्रम

सम्पादक की ओर से 05

कविताएँ

दूधनाथ सिंह की बाईस कविताएं 09

भाष्य

विस्लावा शिम्बोर्स्का की कविता
आत्मग्लानि की प्रशंसा में/ **सुधीर रंजन सिंह** 26

अनुवाद

पोलिश कविता

विस्लावा शिम्बोर्स्का 32
लेज़ेक एलेक्तोरोविच 38
स्तानिस्लॉव बारांचक 39
थॉमस यॉस्त्रन 41
बिक्टर वॉरॉजिल्सकी 43
अनुवाद : **मैनेजर पाण्डेय**

अंग्रेज़ी कविता

बिली कालिन्स/ अनुवाद : **मनोज पटेल** 46
मार्टिन एस्पादा/ अनुवाद : **अशोक कुमार पाण्डे** 51

तुर्की कविता

अतौल बहरामुग्लु/ अनुवाद : **सिद्धेश्वर सिंह** 56

नेपाली कविता

मुकुल दहाल/ अनुवाद : **अपर्णा मनोज** 63

मध्य अमेरिकी कविताएँ

रॉक डाल्टन 71
राबर्ट सोसा 73
अनुवाद : **अशोक कुमार पाण्डे**

किस्सागो कवि

दो कवियों की कथा/ **ध्रुव शुक्ल** 75

वीनस ग्रह से कविता

निर्मला गर्ग की कविताएँ 83

कवि की डायरी

प्रयाग शुक्ल की कविता पर कुछ.../ **प्रभात त्रिपाठी** 101

युवा कविता

अविनाश मिश्र 109

सुरेश सेन निशान्त 120

सिद्धार्थ त्रिपाठी 137

आस्तीक वाजपेयी 143

भोजपुरी कविता

प्रकाश उदय की कविताएँ/ **मृत्युंजय** 156

ओड़िया कविता

हरप्रसाद दास

काव्य-संकलन 'वंश' से/ चयन एवं अनुवाद : **प्रभात त्रिपाठी** 168

गुजराती कविता

उषा उपाध्याय 181

कविता

स्वप्निल श्रीवास्तव की कविताएं 199

मार्फ़त

ख्वाजादास के पद/ मार्फ़त : **मृत्युंजय** 215

कवि की चिट्ठी

गणेश गनी 219

अवदान 224

सदानीरा के विक्रय स्थल 226

सम्पादक की ओर से

एक दूसरा जीवन

टी.एस. इलियट ने लिखा है कि लेखक अपने समय के बारे में लिखकर स्वयं अपने बारे में लिखता है। एक लेखक की कृति से उसके जीवन का अटूट सम्बन्ध है। इस तरह यह मानने में कोई हर्ज़ नहीं है कि सारी रचनाएँ उसके लेखकों ... आत्मकथाएँ ही हैं। जो लेखक अपने जीवन को लाँघ करके सामाजिकता के सम्मोहन से वशीभूत हो जाते हैं, वे अपनी रचनात्मकता की शर्तों को भूल जाते हैं। इसक. परिणाम यह होता है कि वे जो कुछ रचते हैं, वह सारा का सारा छद्म होता है। आप साहित्य की जगह समाजशास्त्र नहीं लिख सकते हैं, साहित्यकार होकर रहना है तो समाजशास्त्री का वध करना होगा।

सर्बिया के कवि **तोमाज़ सालामन** अपनी एक कविता **Folk Song** में जो कुछ कहना चाहते हैं, उससे मेरी यह धारणा और स्पष्ट हो सकेगी। उनकी इस कविता का अविकल अनुवाद प्रस्तुत है—

प्रत्येक सच्चा कवि राक्षस होता है
वह जन को और उसकी वाणी को नष्ट करता है
उसका गायन एक प्रविधि को इतना उन्नत कर देता है
कि वह धरती का नामोनिशां इस तरह मिटाती है

कि हम कीड़ों द्वारा खाए न जाएँ
पियक्कड़ अपना कोट बेच देता है
चोर अपनी माँ को बेच देता है
सिर्फ़ कवि अपनी आत्मा को बेच देता है
जिससे वह अपनी उस देह से अलग हो सके
जिसे वह प्रेम करता है।

यह कविता **डार्क विज़न** की कविता है, क्योंकि हमारा समय डार्क विज़न का समय है, वह अब भी Wasteland का ही समय है। जैसा इलियट ने भी कहा है : ''बिना आशा के प्रतीक्षा करो, क्योंकि आशा गलत चीज़ के लिए आशा होगी।'' हमारा यह समय Wating for Godo का समय है। जहाँ मनुष्य एक जानवर है और उसकी लगाम एक ऐसे मनुष्य के हाथों में है, जो मनुष्य होकर स्वयं जानवर बन चुका है। जानवर की लगाम जानवर के हाथों में। ऐसा विचित्र सामाजिक न्याय चुना है हमारी मानव जाति ने। क्या हिन्दी के कवि यह सब देख पा रहे हैं? या उन्होंने भी किसी धृतराष्ट्र के लिए गान्धारी की तरह अपनी आँखों पर पट्टी बाँध ली है? इन अंधे कवियों को विचारधाराएँ रास्ता दिखाना चाहती हैं। लेकिन जो अंधा है, वह क्या किसी **यूटोपिया** का विज़न देख पाएगा? कुछ कवियों के लिए प्रतिबद्धता, उनका बैंक एकाउण्ट है, उनकी फ़िक्स डिपाजिट है, जिस पर विषधर की तरह कुण्डली मारकर बैठे रहते हैं।

क्या कोई इस तथ्य से इंकार कर सकता है कि हिन्दी के सारे कवि मध्यम वर्ग के कवि हैं। सारे कवि नौकरीपेशा हैं। अपनी जीविका और परिवार के भरण-पोषण के लिए तरह-तरह की नौकरियाँ करते हैं। ऐशोआराम की ज़िन्दगियाँ जीते हुए कविताएँ लिखते रहते हैं, मान-सम्मान पाते रहते हैं और एक-दिन यह संसार छोड़कर चले जाते हैं।

यदि यह मान भी लिया जाए कि कविता लिखना एक तरह का आत्म-संघर्ष है। इन आत्मसंघर्षी कवियों, इन काग़जी योद्धाओं ने जो कुछ भी लिखा है, उसके सत्यापन का क्या तरीका है? क्या यह माना जा सकता है कि उन्होंने जो कुछ लिखा है, वह उनके जीवनानुभव का हिस्सा है, किन्तु उसे कहाँ से अर्जित किया है? उनके संघर्ष की सरिता का उद्गम कहाँ है? इस पर विचार करने पर उनकी पोल खुल जाने की पूरी सम्भावना है। जो लोग इन कवियों को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, वे उनकी पोल के रहस्यों से अच्छी तरह वाकिफ़ हैं। एक तरफ़ सपाट, सतही, पोखरी जीवन दूसरी तरफ़ आत्मसंघर्ष, राजनीतिक प्रतिबद्धता और विचारधाराओं के सिपाही। इसमें कहीं कोई तारतम्य बैठाया जा सकता है? इन कवियों के लिए यह तारतम्य उनकी कविता है। वे अपनी कविताओं का मुखौटा पहनकर निराला और मुक्तिबोध की तरह दिखना चाहते हैं। क्या ऐसा सम्भव है? निराला और मुक्तिबोध न होकर उन जैसा ही दिखना! क्या यह सम्भव है?